माँ का आँचल

Compiled By

राभरोस टोण्डे और मुस्कान केशरी

COPYRIGHTS

Copyright © 2022 माँ का आँचल

Compilers – Muskan Keshri and Rambharos Tondey

Editor – Nikhil Jain

Cover Designer – Nikhil Jain

ISBN: 9798888155912
Published by MS Keshri Publication
India

All rights are reserved. Copyright of individual work is maintained by the respective co-authors.

No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the respective co-author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of all the co-authors. Co-authors of this book are solely responsible and liable or it's content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions, and references. The content of this book shall not constitute or be constructed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. The Publisher and Editor shall not be liable

whatsoever for any errors, omissions, whether such omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

DISCLAIMER

This book is designed to cover the wide range of ideas about our themes following exciting genres presented either in Hindi, English, or Hinglish. Each writer's content is their feelings, and neither the publication nor the compiler will be held liable for any psychological, emotional, or financial harm. We believe all the writeups are unique and their own creations, but in the case of plagiarism, only the co-author is responsible, and not the compiler or the publisher.

ACKNOWLEDGMENT

I Thanks Miss Muskan keshri (Founder of MS Keshri Publication) and Nikhil Jain (Co-Founder of MS Keshri Publication) who really Believed in me to make my project Successfully.

This Book is dedicated , to all my family members and all my dearest friend who always motivate me to take a forward step.

ABOUT THE BOOK

माँ का आँचल

माँ शब्द का अर्थ जननी हैं अर्थात जन्म देने वाली माँ प्रेम और वात्सल्य का दूसरा रूप माँ हैं। माँ अपने बच्चों की प्रथम शिक्षक होती हैं। उनके प्यार की तुलना अन्य किसी प्रेम से नहीं किया जा सकता। माँ हमेशा अपने बच्चों की खुशी में अपनी खुशी ढूंढ लेती हैं । इस दुनिया में सबसे आसान और अनमोल शब्द हैं माँ। माँ दुनिया का एक मात्र शब्द हैं, जिसे किसी परिभाषा की जरूरत नहीं, क्योंकि यह शब्द नहीं एहसास हैं। माँ प्रेम त्याग सेवा की मूर्ति हैं। सचमुच माँ ईश्वर का प्रतिरूप हैं। "मांग लू यह मन्नत की फिर यही जहान मिले फिर वही गोद, फिर वही माँ मिले।"इस संग्रह में माँ के साथ बिताएं हर एक अनोखें पल और ममता से भरे लम्हें को दर्शाया गया हैं। आशा हैं यह संग्रह आप सभी लोगों को पसंद आएगा।

INDEX

COMPILERS

मुस्कान केशरी **10**

रामभरोस टोण्डे "अधिवक्ता" **12**

CO-AUTHOR

1. डॉ.(श्रीमती) शकुन्तला टोण्डे 15
2. डाँ ऊषा अग्रवाल 17
3. डाँ राधा दुबे 20
4. पिंकी सिन्हा 22
5. डा० तारा सिंह अंशुल 24
6. कलमश्री विभा सी तैलंग 26
7. सुनीता मोदी 29
8. डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह 32
9. डॉ असीम आनंद 34
10. बाबूराम सिंह कवि 36
11. माधवी लता 39
12. आशा सिंह 42
13. अनिता कुशवाहा 46
14. डॉ.श्रीमति अलका अरोड़ा 49

15. रश्मि श्रीवास्तव 'सुकून' 51
16. अंजली साव 53
17. श्रीमती सुरेखा मालवणकर 55
18. पूरन सिंह राजपूत 57
19. हृदेश वर्मा 'महक' 59
20. पूनम सिंह 61
21. ममता यादव 63
22. मणीशंकर दिवाकर (गदगद) 65
23. तेजश्री ढोमणे 68
24. समीउल्लाह खान 71
25. श्रीमति ज्योति रानी(राज) 73
26. प्रज्ञा महेंद्र शर्मा 75
27. दिवाकर पाण्डेय 77
28. ममता राजपूत ',हीर' 80
29. प्रतिभा त्रिपाठी 83
30. अजय वर्मा 'अजेय' 86
31. विनय बंसल 89
32. स्वराक्षी स्वरा 91
33. रचना उनियाल 93
34. ललन प्र सिंह 95
35. डॉ० मीनी झा 'साक्षी 98

36. अनिल राही 101
37. डॉ माधुरी त्रिपाठी 103
38. भावना भूषण 105
39. शिवानी श्रीवास्तव 108

About The Founder and Compiler

She is Muskan keshri, daughter of the late Manoj keshri and Sandhya Devi. She is an extremely talented girl who, at such a young age, has done wonders. She is the founder of MS Keshri Publication, a writer, teacher, dancer, singer, NCC cadet, and anchor. She has co-authored over 200 anthologies and has compiled 12 anthologies to date: जिदंगी के यादगार पल " , " मुस्कान ", "दिल की धड़कन -आर्मी /एनसीसी ,"पापा " ," सावन के झूले ," प्रकृति के रंग " ," कच्चे धागे के पक्के बंधन

", " मार्गदर्शक " , " देश की शान तिरंगा, " अंतर्मन की भावना " ," Meu Amor " and "Slow and steady wins the race." She is a strong believer in hard work. She has the motive to work for her country and receive lots of love. She loves dancing, writing, and painting, and she loves helping people who suffer during their tough times. She is a full-time animal lover and is a very cooperative person to work with. She wins a lot of prizes and almost wins all the competitions she is a part of. She works hard for our dreams and makes sure that her hard work never goes in vain. She wants to change the world in a way where there is every kind of emotion. She also sometimes becomes moral support for people in order to advise them. At a very young age, she has experienced a lot, and people often contact her for advice. She tries to help everyone in the best way possible.

She believes that if we have faith in ourselves and we know what to do and at what time, then nothing is impossible. All the anthologies she has complied in the past are all very special to her. She has worked with different publications. She deserves more and more in her charming and beautiful life.

Instagram: Keshri7589
Muskankeshrimuskan 'YouTube Channel
Email = muskankeshri385@gmail.com

रामभरोस टोण्डे "अधिवक्ता"

नाम - रामभरोस टोण्डे "अधिवक्ता"

जन्मतिथि - 01/06/1974

व्यवसाय - वकालत

शिक्षा - एम. ए. (समाजशास्त्र), एम फिल.(समाजशास्त्र), एल. एल. बी.

लेखन का विधा - कविता, लेख

प्रकाशन - अभ्युदय, स्पंदन, शब्दों की दास्ताँ, संगम सवेरा,लाइफ इज लाइक ए फिश, कलम चलने दो - 4 , काव्य सलिल, चिन्हारी, सतनाम संदेश,अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं

सम्मान - प्रधानमंत्री कार्यालय नई द्वारा स्वच्छ भारत पर शुभकामनाएं संदेश , शब्द सुगंध सम्मान, काव्य गौरव सम्मान, पुनीत साहित्य रत्न सम्मान, कोरोना जागृति रचनाकार सम्मान, मधुशाला गौरव सम्मान, काव्य सलिल सम्मान, छत्तीसगढ़ काव्य श्री सम्मान, हरित पारिस्थितिकी तंत्र बहाली सम्मान, बेस्ट ग्रीन इनिशिएटिव अवार्ड, पर्यावरण संरक्षण सम्मान, पर्यावरण मित्र सम्मान और अनेक सम्मान प्राप्त

माँ की ममता

माँ तो आखिर होती है माँ,
अपने सपनों को त्याग कर ।
रातों को जागकर,
हमारी ख्वाहिशें करती हैं पुरी।

माँ तेरी आँचल में,
मेरी दुनिया बदल गयी।
माँ तुम मुझे छोड़ कर,
क्यों चली गयी तेरी याद आती हैं माँ।

आखिर कैसे भूल जाऊँ माँ,
आँखे भर आती हैं तेरी याद में।
माँ का कर्ज नहीं चुका सका,
मुझे छोड़ कर क्यों चली गयी।

खुश होगी माँ एक दिन तू भी,
जब लोग मुझे तेरा बेटा कहेंगे।
हर पल में खुशी देती हैं माँ,
अपनी जिंदगी से जीवन देती हैं माँ।

अभी जिंदा हैं माँ मेरी,
भरोसा हैं मुझे कुछ भी नहीं होगा।
मैं जब घर से निकलता हूँ,
माँ की दुआ भी मेरे साथ हैं।

डॉ.(श्रीमती) शकुन्तला टोण्डे

नाम - डॉ.(श्रीमती) शकुन्तला टोण्डे

पति का नाम - श्री एम.डी. टोण्डे

माता का नाम - श्रीमती जानकी कुर्रे

जन्मतिथि - 01/07/1979

शिक्षा - बी.ए. एम.ए (इतिहास) एम .ए. (राजनीति शास्त्र)

एम.फिल.(इतिहास) पीएचडी. (इतिहास)

अभिरुचि - कविता लेखन , मैगज़ीन पढ़ना , पुस्तक लेखन खेल - कूद , पेपर पढ़ना इत्यादि ।

उपलब्धि - राष्ट्रीय सम्मान पत्र , पत्र पत्रिकाओं में रचना प्रकाशित है।

पता - क्वा.नं. 30 आशानगर , उस्लापुर पोस्ट- सकरी जिला - बिलासपुर (छ.ग.) पिन - 495001

माँ की ममता

माँ की आँचल सब के लिए सामान हैं ,
माँ प्रेम की सागर हैं।
माँ ममता की मूरत होती हैं ,
माँ का प्यार हमारे लिए महान होती हैं।

बच्चा जन्म लेते ही प्यार से माँ बोलते हैं ,
माँ की ममता सबके लिए सामान हैं ।
माँ भेदभाव नहीं करती ,
माँ का प्यार हमारे लिए महान होती हैं।

माँ हर कष्ट सहकर भी खुश रहती हैं ,
माँ की आँखों में कभी आँसू नहीं होती ।
माँ की हर शब्द अनमोल होती हैं,
माँ का प्यार हमारे लिए महान होती हैं।

माँ ऐसा शब्द है जिसका कोई मोल नहीं होती ,
माँ ममता की वो अनमोल खजाना हैं।
माँ की ममता दुनिया की अनमोल धरोहर हैं,
माँ का प्यार हमारे लिए महान होती हैं।

डॉ ऊषा अग्रवाल

डॉ ऊषा अग्रवाल,प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व विद्यालय छतरपुर मध्य प्रदेश में हैं। आपको लिखने का शौक तो छात्रावस्था से ही था लेकिन अपने विषय से संबंधित पुस्तकों को जो स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम में थीं, उन्हें लिखती रहीं। काव्य के क्षेत्र में अभी हाल ही में आपको सम्मानित किया गया, कहानी भी लिख रही हैं जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय e पत्रिका में प्रकाशित हो रही हैं।

माँ की ममता

माँ ही जीवन माँ ही दर्पण, माँ से ही सारा संसार
माँ से अच्छा शब्द ना कोई, माँ से बड़ा ना कोई प्यार
माँ ने दिया सुंदर उपहार!!
माँ ही छत्र और छाया है, माँ ही रचनाकार,
ईश्वर भी नतमस्तक हो जाता, माँ ने दिया सुंदर उपहार!
माँ घरा की स्वर्ग भूमि है, कण- कण पोषित करती
कितनी भी हो दुखी जगत् में, बच्चों को देती प्यार
माँ ने दिया सुंदर उपहार!!
माँ नहीं तो सब बेकार, क्षिति जल पावक गगन समीरा
अपने में समाहित कर देती है नवजीवन,
माँ नदी झील समुंदर की गहराई है ,
ना जाने कितनी मोती की सीपियाँ समांई,
माँ से ही मिलता बच्चों को दुलार!
माँ ने दिया एक सुंदर उपहार!!
माँ के आंचल को पाने के लिए, तीन देव ने भी जिद मचाई है,
माता अनसुइया से पय पान के लिए,
तीन देव को माँ ने अपनी संतान बनाई है,
माँ का प्यार अनुपम उधार ! माँ ने दिया सुंदर उपहार!!

माँ की दौलत से बड़ी कोई दौलत नहीं होती,
माँ की कद्र उनसे पूछो ?जिनकी माँ नहीं होती,
माँ के आंचल में छिपा खुशियों का खजाना,
तीन देव माँ की ममता का कोटिशः सुख पा रहे हैं
माँ के आंचल के है हम कर्जदार!
माँ ने दिया एक सुंदर उपहार!!

डॉ राधा दुबे

नाम - डॉ. राधा दुबे

पति - श्री चन्द्रहास दुबे (एडवोकेट)

शिक्षा - एम. ए. हिंदी व राजनीति शास्त्र (बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, म.प्र.)

पी-एच.डी., बैचलर ऑफ जर्नलिज्म एण्ड कम्युनिकेशन,

(रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर, म.प्र.)

माँ का आँचल

माँ का आँचल जब मेरी ओर बढ़ गया
माँ की ममता का साया लहरा गया

सोच में डूबी हूँ किनारा कहाँ लग गया
अभी तो यही था कहाँ छुप गया
माँ की मीठी वाणी सपनों में घोल गया
वह कौन सा पल था जो अब खो गया
माँ का आँचल .....

कभी इधर तो कभी उधर, अधर में छोड़ गया
जाते-जाते वह मुझे बेचैन सा कर गया
जब बैठी लिखने माँ पर तो ये क्या हो गया
यादों का एक झोंका आँखों को नम कर गया
माँ का आँचल .....

कविताओं में माँ का रूप ढलता गया
वहीं उपन्यासों में चेतनाशील नारी बन गया
माँ से क, ख, ग सीखकर मानव ज्ञानी बन गया
उसके आँचल से लिपटकर दुनिया जीत गया
माँ का आँचल .....

माँ का वो साया जाने कहाँ चला गया
माँ का आशीष तो मिला पर सहारा चला गया
माँ का आँचल .....

पिंकी सिन्हा

नाम -नाम -पिंकी सिन्हा

जन्म-24 जुलाई 2000

शिक्षा- बी.ए. फाइनल

उपलब्धि -अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित रचना ।सम्मान महाकवि आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री स्मृति सम्मान।

ग्राम सरगवां, पो. मस्तूरी, थाना मस्तूरी जिला बिलासपुर (छत्तीसगढ़) पिन.495551

"गीत"

१) मां आंचल में, मुझको छुपाले,
मां आंचल में ,थोड़ी सी जगह दे,
आंखों में मेरी, कैसी है नूर,
न जानू मां ,क्या है कुसूर,
तुम हो मुझसे, मां क्यों दूर,
मां आंचल में,मुझको छुपालेे,
मां आंचल में, थोड़ी सी जगह दे

२) जन्म दिया है, तुमने मुझको,
बीच डगर में, छोड़ ना मुझको,
लोरी सुना दे, बाहों में लेके,
हर एक मोड़ पे , सहारा देदे,
मां आंचल में, मुझको छुपा ले,
मां आंचल में ,थोड़ी सी जगह दे

३) हर पल कहते थे, दुनिया वाले,
बेटी हुई हैं, क्या त्तीर मारे,
रूप दिए हैं, विधाता हमारे,
जन्म लिये है, क्या है सजा रे
मां आंचल में,मुझको छुपा ले,
मां आंचल में,थोड़ी सी जगह दे

डा० तारा सिंह अंशुल

डा० तारा सिंह.अंशुल

अंशुल साहित्यिक उपनाम

विभिन्न सामानों से अलंकृत वरिष्ठ कवयित्री कथाकार आर्टिकल लेखिका एवं प्राकृतिक चिकित्सक

डी०पी०ओ० (सेवा नि०) महिला एवं बाल विकास विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

राजपत्रित अधिकारी विभाग महिला एवं बाल विकास विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ उत्तर प्रदेश

शिक्षा - स्नातक राजनीति शास्त्र अंग्रेजी साहित्य समाजशास्न

तेरा प्यार पाना चाहती हूं

कहां हो आओ मां मैं तेरा प्यार पाना चाहती हूं
बचपन आये लौट कर गुज़रा ज़माना चाहती हूं

जब याद आती मां अश्क मोती आंखों से झरते
कभी मां की साड़ी लपेटकर हम सजते संवरते

मां तुझे एहसासों में भरके मुस्कुराना चाहती हूं
कहां हो आओ मां मैं तेरा प्यार पाना चाहती हूं

मां के मोहब्बत के लिए तरसी हूं मैं जीवन भर
खोई मोहब्बत मिली नही अपनों से भी मनभर

जीवन में फिर वो बचपन का तराना चाहती हूं
कहां हो आओ मां मैं तेरा प्यार पाना चाहती हूं

चकमा देती है ज़िंदगी ख़्वाब ख्वाहिशों के तले
बह गये अश्कों के संग आंखोंमें जो ख़्वाब पले

टूटा बिखरा है यह दिल फिर सजाना चाहती हूं
कहां हो आओ मां मैं तेरा प्यार पाना चाहती हुँ

कलमश्री विभा सी तैलंग

नाम- कलमश्री विभा सी तैलंग

जन्मस्थल -सिन्दरी झारखंड

शिक्षा-बी ए (विशेष)हिन्दी 1983-1986,इन्द्रप्रस्थ कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

पिता-डा चंद्रा देव चौधरी

माता -उषा चौधरी

पति-सुधीर तैलंग

माँ का आँचल

कलमश्री विभा सी तैलंग

माँ की ममता अनमोल है

उनके प्यार का कोई तोल नहीं

उनके थप्पड़ में कोई झोल नहीं

स्नेहसिक्त वचन हो

या कर्कश तीखापन

मिर्ची सी बोल भी लगे मिस्री सी

माँ तो माँ ही होती है

ममत्व जिसका कालजयी

जो प्रेममय था ,है ,

और सदाबहार रकता है

माँ राजरानी हो या ,मजदूर गरीब

बच्चों का भला जो खुद को भूलकर सबसे पहले चाहे,

यह निस्वार्थ त्याग भावना भला और

कहाँ,किस्मे दिखी??

देश,समाज,जीवन परिवार बोली भाषा लोकोक्तीयों कहावतों गीतों

लोकनीतियों की बारीकियों को इतिहास के किस्से और ग्रंथों के श्लोकों

को

कहानियों में बिंध

नैतिकताओ,रीति नीतियों को खेलते,खिलआते,हँसते,रुलाते,
उठते,बैठते,खाते,पीते,नहाते,धोते
हर रंग और रुप को ,उसके सतरंगी नवरुंगओ को वोह कब सिखाती है
मालुम ही नहीं पड़ता,स्कूल कालेज
डिग्री कमाई व्यवसायिक ज्ञान
सब फीकी पड़ जाती है
एक माँ के व्यवहारिकता के
उन पाठो को याद करो जिसमे
पिता की सिध्दांतों का जामा चढा
होता है बस हम उन पर अमलीजामा
नहीं पहना पाते
वह हमारे बुद्धि की फेर है
नीयत और नियति है
आज के फेर में हम बीते कल को
भुल जाते हें नये पर पुराने का घोल नहीं करना चाहते

सुनीता मोदी

नाम - सुनीता मोदी

शहर- नागपुर महाराष्ट्र

माँ तुझ बिन जग सूना

माँ सांसों का है पता,
धरती पर भगवान।
अम्मा, मम्मी जो कहो,
माँ जीवन मुस्कान।

जीवन पथ की सारथी,
माँ से ही विश्वास।
कहने से पहले सदा,
माँ ने जानी आस।

माँ मूरत ममतामयी,
मन- मंदिर भगवान।
सातों दिन जो पूज्यते,
उनका ही सम्मान।

जब तक माँ आंगन दिखी,
रही सदा नादान।
माँ जो अब दिखती नहीं,
होता माँ का ज्ञान।

अब भी मैं रोती कभी,
लगता माँ है पास।
यह मेरा एहसास है,
या है मेरी प्यास।

डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

नाम डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

जन्म-तिथि - 22 जुलाई 1940

पिता का नाम–स्व. मेहता रामचरण सिंह, स्वतंत्रता सेनानी

शैक्षनिक योग्यता- एम.एससी,पी.एचडी,डी.लिट्

कार्मिक योग्यता–भू-वैज्ञानिक,पर्यावरणविद् एवं हिन्दी रचनाकार क्षेत्रीय कार्य अनुभव–(1)भू-वैज्ञानिक,रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

(2) भू-वैज्ञानिक,उपनिदेशक भूतत्त्व,खान एवं भूतत्त्व विभाग बिहार सरकार

(3)निदेशक प्रभारी,(प्राकृतिक

संसाधन प्रकोष्ठ) बिहार राज्य योजना पर्षद, पटना(4) तकनीकी सदस्य,बिहार राज्य द्वितीय सिंचाई आयोग ,पटना

माँ

मेरी किस्मत भी मेरी मां है
मेरी ज़न्नत भी मेरी मां है
जो कुछ हूं जैसा हूं मां का हूं
मेरी बरकत भी मेरी मां है
साहस करके चढ़ा हिमालय पे
मेरी हिम्मत भी मेरी मां है
धरती के नीचे भी उतरा हूं
मेरी कूबत भी मेरी मां है
जब भी जो चाहा सबकुछ पाया
मेरी चाहत भी मेरी मां है
मैं तो ठहरा कुदरत का सेवक
मेरी कुदरत भी मेरी मां है
कहता आया सभी से 'मेहता'
मेरी हसरत भी मेरी मां है

डॉ असीम आनंद

नाम- डॉ असीम आनंद , आगरा (प्रधानाचार्य, कवि, लेखक, वक्ता, सामाजिक कार्यकर्ता)

1- अध्यापन कार्य,--30 वर्ष(6-12tak)

2- मुक्तक, छंद, कविता, गजल, लेखक

3- लेखक- कोर्स पुस्तक (nur to cl -10)12, अन्य-5, सहलेखक--29

4- पत्र- पत्रिका - लगभग 70,

5- ऑन लाइन काव्य पाठ-60

6- ऑफ लाइन काव्य पाठ-110

7- साहित्य समूह से जुड़े-28

8- प्राप्त पुरस्कार-102 (national, Inter national) ऑफ लाइन

9- संपादक -2

10- संस्था सदस्य- १४

ममता का आंचल

मुझपे जान लुटाती है, माँ मेरी वो प्यारी है ।
मेरे दुख को सहती है वो, सारे जग से न्यारी है ।।
माँ से बढकर नहीं है कोई, दौलत इस दुनिया मे
धरती पे वो ईश रूप है, गुरू है इस दुनिया मे
माँ आँचल के फूल है हम, पावन रक्षक हमारी है
मुझपे जान लुटाती है, ,.....
दिव्य रूप है माँ का जग मे, यश उसका गाये जहाँ
तिहुँ लोक मे उसके जैसा, कोई ना बलशाली यहाँ
विपदा पड़ी जो सुत पे अगर, बने दुर्गा अवतारी है
मुझपे जान लूटाती है.....
बेटा चाहे कैसा भी हो, माँ को प्यारा लगता है
कष्ट हजारौ सहती जग मे, श्याम सलोना लगता है
माँ से बढ कर कोई ना दुजा, वो मेरी दुख हारी है
मुझपे जान लूटाती है.....

बाबूराम सिंह कवि

बाबूराम सिंह कवि

जन्म- 16 अप्रैल सन 1954 ई॰

शिक्षा- एस॰ एस॰ सी॰

पिता स्व॰ सहदेव सिंह, माता-स्व॰ महराजी देवी,पत्नि -भाग्यमनी देवी

जन्म स्थल-ग्राम-बडका खुटहाँ पो॰ विजयीपुर जि॰- गोपालगंज, बिहार

लेखन-सन 1980 से समस्त विधाओं में।

ग्राम-बडका खुटहाँ पोस्ट-विजयीपुर

जिला-गोपालगंज (बिहार)

माँ का मन शुचि गंगाजल है

सकल जगत की धोती मल है।
माँ का मन सुचि गंगाजल है।।

हित - मित संसार में स्वार्थ,
भ्राता,पत्नि के प्यार में स्वार्थ।
बेटा - बेटी आदि जितने भी-
सबके सरस व्यवहार में स्वार्थ।

पावन माँ का प्यार अचल है।
माँ का मन सुचि गंगाजल है।।

कूछ भी हो कभी नहीं घबड़ाती,
गजब अनूठी माँ की छाती।
पति , पुत्र हेतु आगे बढ़कर-
माँ यमराज से भी लड़ जाती।

माता सभी प्रश्नों का हल है।
माँ का मन सुचि गंगा जल है।।

सभ्यता,संस्कार कुबेटा में बोती,
माता कदापि कुमाता नहीं होती।
दीनता,दुख ,विपत्ति को सहकर-
देती जग को सत्य की मोती।

सभय अभय करती हर पल है।
माँ का मन सुचि गंगा जल है।।

सुख - शान्ति सरस उपजाती,
सबका मान सम्मान बढ़ाती।
जग सेवा में सर्वस्य लुटाकर-
मन ही मन हरदम मुस्काती।

जग सर्वोपरि सेवा का फल है।
माँ का मन सुचि गंगा जल है।।

माधवी लता

मैं माधवी लता मुजफ्फरपुर से हूं।मेरा जन्मस्थान पटना है।शिक्षा दीक्षा पटना विश्वविद्यालय से हुई है।मैंने अर्थशास्त्र में MA किया।लिखने में मेरी अभिरुचि है।पत्र पत्रिकाओं में छपती है
मेरी रचनाएं।संवेदना ही है मेरी लेखनी की प्रेरणा।

मां अनमोल पूंजी

मां मुझे सदा याद आती हो..!
कैसे भूलूं तुम को..!!
हर सांस में समाई हो तुम मां..!
अपने खून से सींचा है तूने
तुमने अपने हाथों से
गढ़ा है मुझे मां..!!!

बड़ी याद आती है तेरी..
कैसे भूलूं वह प्यार.. वह दुलार..!!
वह रूठना..वह मनाना..

कैसे पाला तुमने इस जिद्दी बच्चे को..! मेरी मां बड़ी याद आती है तेरी..!!
काश फिर मिल जाए..!!
तो चरण पखारू मां..□

प्यार दू इतना..!!
जितना ना हो सोचा..!!!
पर अब नहीं है संभव..
तू नही आयेगी..!!

मैं अपना प्यार तुम्हारा समझ..

बाटूंगी लुटाऊंगी..

अपने बच्चो में..!!

मां मेरी..!

बड़ी याद आती है तेरी..!!!

आशा सिंह

पूज्य दादा जी ने नाम दिया 'आशा'। जीवन में नाम के अनुरूप कितनी खरी उतरी ये तो राम ही जानें।माता पिता और परिवार से मिले संस्कारों के सहारे शिक्षा पूरी की। 'राजनीति शास्त्र' में एम .ए. किया। शीघ्र ही परिणय सूत्र में बँधकर भरे पूरे परिवार में आ गई।समय बढ़ा और जीवन में कई तरह की जिम्मेदारियाँ भी। पति डाक्टर हैं ,कर्त्तव्यनिष्ठ,सरल हृदय और विनोद प्रिय। दो पुत्र हैं और माँ सरस्वती के आशीर्वाद से डाक्टर है। काव्य और गीत संगीत में रुचि तो बचपन से ही थी लेकिन कभी व्यक्त नहीं कर सकी अपने शर्मीले स्वभाव के कारण।

माँ की पीड़ा

माँ से बच्चों की दूरी
सचमुच उसकी है मजबूरी,
बच्चों के हित की खातिर
यह प्रयत्न तो है ही जरूरी।
मन तड़प उठे कभी ऐसे
सीने से लगा लें बेटे को,
नज़रों से दूर क्यों किया हाय!
आँखों से चूम लें मुखड़े को।
उड़ जाए पंख लगा कर
बाहों में उसको भर लूँ,
ममता का आँचल फैला कर
दुख के हर प्रतिपल हर लूँ।
अक्सर विचार आता है ये
क्या खाता पीता होगा,
दिन भर का थका हारा वो
कैसे रहता सोता होगा।
कभी खेल में गिर जाने से
चोट ना उसको लग जाए,
कोई पीड़ा उसे ना पंहुचे

करुणा से मन भर भर आए।
फिर समझाना पड़ता है
अपने इस व्याकुल मन को,
केवल ममता की छाँव तले
समुचित विकास नहीं संभव।
अच्छी शिक्षा ही उसको
उन्नति की राह दिखाएगी,
पीड़ा की अनुभूति ही उसको
सुख का महत्तव बताएगी।
अनुशासन और श्रम के मोती
अपने दामन में भर के,
जीवन पथ पर आना है उसे
मुट्ठी में भविष्य को कर के।
ममता के हाथों विवश ये मन
फिर भी अधीर हो जाए,
अँधियारी काली रात में माँ
जब सोते से जग जाए।
याद आएँ हृदय के टुकड़े
और आँखें नीर बहाएं,
तब स्वार्थ के सम्मुख क्षण में
हर तर्क पराजित हो जाए।

कुछ क्षण व्यतीत होने पर
माँ अंकुश स्वयं लगाए,
फिर स्वार्थ की आँखें बंद कर
एक आस का दीप जलाए।
यह दूरी एक तपस्या है
सपनों को सच करने के लिए,
कुछ खोना तो होगा ही
उज्जवल भविष्य पाने के लिए।
मन को यूँ ही समझा कर
हर पल का दुख है सहना,
दे कर अपना आशीष प्यार
संपूर्ण उसे है करना।
वो अपना परिचय आप बने
माँ देख रही यह सपना,
देश का वो सम्मान बने
तभी सार्थक जीवन अपना।

अनिता कुशवाहा

अनिता कुशवाहा

कटनी

म. प्र.

मैं ये प्रमाणित करती हूँ कि मेरी ये रचना पूर्णतया मौलिक एवं स्वरचित है,ये कहीं से नकल की हुई नहीं है।

माँ का आँचल

जैसे- जैसे मैं उम्र की
सीढ़ियां चढती जा रही हूँ
वैसे-वैसे ए माँ,
तू मुझमें समाती जा रही है
मैं चाहूं या न चाहूं
मैं माँ का आँचल पकड़कर
तेरे पीछे चल रही हूँ
तू अपने वयक्तित्व की धरोहर
मेरे में समाती जा रही है
अपने आप को मेरे में
परिवर्तित करके अपने
नामोनिशान छोड़े जा रही है
माँ की मोहब्बत जिंदा है मुझमें
मेरे हाव भाव में
मेरी आदतों में
मेरे क्रिया कलाप में
अक्सर मेरे कानों में
धीरे से फुसफुसाती है तू माँ

ये धरोहर तुझे सौंप रही हूँ
तुम अपनी बेटी को सौंपना
ये वंश की धरोहर बनकर
माँ की मोहब्बत कायम रहेगी
ए मां ,तू जिंदा रहेगी हमेशा
मुझमे....।

डॉ.श्रीमति अलका अरोड़ा

डॉ.श्रीमति अलका अरोड़ा

प्रेरणा स्त्रोत - श्रीमान एस के अरोडा जी , सुश्री आयुषी अरोड़ा जी श्रीमान मयंक खन्ना जी श्रीमान स्पर्श कुमार अरोड़ा जी श्रीमती मनोज वाला अरोड़ा जी (अश्रुपूरित श्रद्धांजलि -स्वर्गीय श्री दयानंद अरोड़ा जी , स्वर्गीय श्री चंदन सिंह अरोड़ा जी)

पसंदीदा प्रकाशक -

M S केशरी प्रकाशन - मुस्कान केशरी जी

प्रोफेसर - बीएफआइटी देहरादून

अनगिनत राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन

क्यूं मेरे पास नहीं हो माँ

माँ तुम्हारी याद जब जब आती है
अश्रुधारा आँखो से बह जाती है
होके विदा दुनियाँ से तुम हो कहाँ
सृष्टि क्यूं इतनी कठोर हो जाती है
तेरी ममता को तरसता दिल मेरा
कोई दुआ मुझको नहीं मिल पाती है
माँ तुम्हारी याद जब जब आती है
अश्रुधारा आँखो से बह जाती है

बीच दरिया के ही जाना था तुम्हें
क्यों मुझे निश्छल स्नेह तुमने दिया
लौटना संभव तो नहीं उस जहाँन से
तेरी छाँव कैसे फिर से पाऊं माँ
बीच राह छोड जाना बहुत दुखद रहा
माँ तुम्हारी याद बहुत तडपाती है
माँ तुम्हारी याद जब जब आती है
अश्रुधारा आँखो से बह जाती है

रश्मि श्रीवास्तव 'सुकून'

इनका नाम रश्मि श्रीवास्तव 'सुकून' हैं। ये विगत 25 वर्षों से लिख रही हैं। ये पेशे से शिक्षिका हैं। ये दुर्ग छत्तीसगढ़ की निवासी हैं। इनको कविताएँ , लेख एवं लघुकथा लिखना पसंद हैं। इनकी दो चार साझा संकलन कविताएँ अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं।

माँ

माँ मैं इस धरती पर आई
बन करके तेरी परछाई
बिना शर्त करती तू प्यार
हर दम करती है मनुहार
मुझे दंड देती है जब जब
हो जाती मायूस वह तब तब
उस से बड़ा नहीं कोई अब तक
सबसे बड़ी है शुभचिंतक
मन पढ़ लेती है वह ऐसे
यंत्र लगा हो उसमें जैसे
बिना कहे सब जान जाती
जरूरत को पहचान है जाती
स्वयं कष्ट में रहती है
पर चिंता मेरी रहती है
जीवन का सुकून है मां से
नहीं है कोई बढ़कर मां से
निश्छल प्रेम करती है बस
चलो मनाएं हम मातृ दिवस

अंजली साव

नाम : अंजली साव

जन्म-तिथि : 10/01/2001

जन्म-स्थान : कांकिनाडा (उत्तर 24 परगना) पश्चिम बंगाल

शिक्षा : बी.ए V सेमेस्टर की विधार्थी

ऋषि बंकिम चन्द्र काॅलेज

सम्प्रति : शिक्षण और लेखन

माँ की ममता

गर्भ से धरती में जो लाई |
हर पीड़ा सहन जो कर पाई॥
घूटनो से कब पैरों पर आई |
तेरी ममता की आचल में पाई॥
लबों पर जिनकी कभी बदुआ नहीं | आई॥
वो माँ ही है जो कभी बच्चों से खफा | ना हो पाई॥
में जब तेरी ज़िंदगी में आई |
तू खुशी से फूले ना समाई ॥
मुझे कोई जन्नत नही भाई |
क्योंकि माँ के कदमों में, मैंने जन्नत पाई॥
भर पेट मुझे खिलाती आई |
अपनी गोद में माँ मुझे सुलाती आई॥
माँ के आचंल जैसा ना कोई कोना पाई |
डर लगा जब भी माँ तेरा आचंल पाई॥
आज मुझे इस लायक बनाई |
तुझ पर में कविता लिख पाई ॥

श्रीमती सुरेखा मालवणकर

नाम ....श्रीमती सुरेखा मालवणकर

पता कल्यान ,जिला -थाने पिन.४२१३०१, मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रस्थापित बहुभाषी कवियत्री ,गज़लकारा एवं लेखिका . ई- काव्यसंग्रह प्रकाशित .

"जीर्णोद्धार "मराठी काव्यसंग्रह प्रकाशित .

तत्तपश्चात हिंदी साहित्य में पदार्पण एवंम हिंदी साहित्यिक कार्यक्रम में योगदान . शिघ्र

ही हिंदी गज़ल सांंझा संकलन प्रकाशन की राह पर ...

माँ

होगी न माँ हमारी किसी की तरह
मिलती रहे हमें माँ इसी की तरह

महसूस है किया बार बार हमने
साथ है माँ खड़ी जिंदगी की तरह

ये चमत्कार है माँ के संस्कार का
चेहरे में बसी चांदनी की तरह

जानते नहीं थे माँ की ममता को
मुसिबत में आती है भली की तरह

माँ निरंतर हमारे रगो में बसी
देह में समाई है नदी की तरह

त्याग समर्पण की मूरत मिसाल माँ
है धरापर यही नुर परी की तरह

चाहती है सुमा माँ यही फिर मिले
हर जनम हम निभाए सदी की तरह

पूरन सिंह राजपूत

पूरन सिंह राजपूत

पिता स्व कुंजन सिंह राजपूत

माता स्व सहोदरा राजपूत

पता कदम कुंआ , लक्ष्मीपुरा वार्ड सागर , म प्र

बुंदेली हिंदी उर्दू में छंद बध्द लेखन

गद्य एवं पद्य

फगनौटे पूरण प्रकाशित काव्य संग्रह

समाचार पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन

सचिव बुंदेलखंड हिन्दी साहित्य एवं संस्कृति विकास मंच सागर

जन्म तारीख 7 नवम्बर 1950 ,विकलांग

माता को समर्पित दोहे

परमहंस वह संत सी, छोड़ मान अपमान,
बैरी को आशीषती , खुशी रखें भगवान।
आशिरवादों की झड़ी , अविरल इक बौछार।
मां के मुंह से बह रही , पावन गंगा धार ।
फल की इच्छा के बिना, करती पूरण कर्म,
मां ही सचमुच जानती , भगवदगीता मर्म ।
धीरे बहुत सकोच वश, बोली इक दिन मात ,
देना सबको कुछ न कुछ , अपनी जो औकात।
कहती थी मां भोगना, जीवन का प्रारब्ध ।
निर्धनता विपदा खुशी , प्रभु कृपा उपलब्ध।
रात समय में वनस्पति, को बेटा मत छेड़ ।
इनमें होता जीव है , सो जाते हैं पेड़ ।
माता ने मुझसे कहा , था जब अंतिम वक्त ,
करना सदा सहायता, प्राणी अगर निशक्त ।
इच्छा उसकी थी यही , मां का अंतिम कौल ।
रखना घर में हर घड़ी , उत्साही माहौल ।
सघन इकाई चिकित्सा , कृत्रिम स्वशन यंत्र ,
अंत समय चाहूं नहीं, मरण होय परतंत्र ।
कठिन परिश्रम कठोर तम , दी जीवन बुनियाद ,
सहज सरल ममतामयी , अम्मा तेरी याद ।
हुआ नहीं अहसास यह , रहे पिताजी फौत ,
आज मरी मां तब लगा, हुयी पिता की मौत ।

हृदेश वर्मा 'महक'

पूरा नाम - हृदेश वर्मा 'महक'

माता का नाम- श्रीमति शांति देवी

पिता का नाम - श्री श्रीपत सिंह

जन्मतिथि - 2 अक्टूबर

पता - आचार्य नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय परिसर, कुमारगंज , अयोध्या, उत्तर प्रदेश ,पिनकोड -224229

माँ

तेरी ममता ने भरा माँ, खुशियों से सारा संसार,
निस्वार्थ प्रेम तेरा, अविरल करुणा का आबशार।
तू दीप की ज्योति जल -जल उजियारा करती है,
तू हँसती है जब भी, चमन में आती बसंत बहार।
तू ही भाग्य निर्मात्री, तू ही स्वयं से साक्षात्कार,
जब तक चाँद- सूरज है, धरा पर रहे तेरा प्यार।
क्या होती है किस्मत की रेखा, हम नहीं जानते,
तू किस्मत का सितारा, मईया तू ही मेरा संसार।
तेरे आँचल की छाँव तले, मिले जीवन हर बार,
हाथ तेरा रहे सिर पर, माँगू तुझसे यही उपहार।
तूने बनाये मेरे रास्ते, तूने ही मुझे चलना सिखाया,
तू रौनक इस ज़मीं की, तू ही है जीवन का सार।

पूनम सिंह

इनका नाम पूनम सिंह है, इन्होंने आर्ट से स्नातक किया है । ये मूलतः मुजफ्फरपुर बिहार की निवासी हैं, फिलहाल ये गाजियाबाद में रह रही हैं । कविता लिखने की रूचि बचपन से ही रही है, ये कविता,गजल और गीत और लेख लिखती है,इनकी रचनाएं कई पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा न्युज पेपर में प्रकाशित होती रहती है, साधनाऔर ईशदेन टीवी चैनलों पर इनकी प्रस्तुति का प्रसारण भी हो चुका है । इन्हें बहुत सारे सम्मान भी मिल चुके हैं ।

माँ

प्रेममई ममता के स्नेह से, मुझको तूने सींचा माँ।
मुझको इस दुनिया में लाकर, दुनिया तूने दिखाया माँ।
जो ना होती तू अगर तो, मैं भी ना होती माँ।
निस्वार्थ प्यार है तेरा मुझसे, अवगत हूं मैं इससे माँ।
दुनिया मेरी खिल जाती है, तेरी भोली सी एक मुस्कान से माँ।
स्नेह से गर तुम सर पर हाथ रख दे,
सारी ऊर्जा मुझमें भर जाती माँ।
खुद भूखी रहकर भी तुम, मुझे न भूखा रखती है।
संस्कार भरे तूने मुझमें,
उथल-पुथल भरी इस दुनिया में,
जीना मुझे सिखाया माँ।
वह बचपन है याद आता,
जब तेरे आंचल में छुप जाती माँ।
उंगली पकड़कर चलना सिखाया,
बोलना तूने सिखाया माँ।
चाह कर भी तेरे उपकार का,
कभी ना भरपाई कर पाऊंगी माँ।
तूझे देख मैं समझ गई खुदा कैसा होता माँ..... ।।

ममता यादव

नाम - ममता यादव

जन्मतिथि - ३१/०१/१९९१

शिक्षा - एम.ए. बी.एड.

कार्यक्षेत्र - शिक्षिका लेखन कार्य

संप्रति - १

ईमेल - mamtapintuyadav@gmail.com

संपर्क सूत्र - 9082244262

पता - ओम साईं दर्शन कॉलोनी चकाला सिगरेट फैक्ट्री

अंधेरी पूर्व मुंबई महाराष्ट्र ४०००९९

तुम ऐसी ही रहना मां

नैनों में आशा जैसी मस्तक पर आभा जैसी,
खुशियों की संसार जैसी पतझड में बहार जैसी,
तुम ऐसी ही रहना माँ।

भूख लगे तो खीर जैसी प्यास लगे तो नीर जैसी,
मुश्किलों में राहत जैसी मेरे कदमों में तेरी आहट जैसी,
तुम ऐसी ही रहना माँ।

जीवनदायिनी जननी जैसी सागर से भी गहरी जैसी,
ज्ञान-प्रकाश की ज्योति जैसी अश्कों में बसे मोती जैसी,
तुम ऐसी ही रहना माँ।

मंगलकारी अनुभव जैसी महानता की वैभव जैसी,
सर्वगुण सम्पन्न श्रोत जैसी अथाह शक्ति की ज्योत जैसी,
तुम ऐसी ही रहना माँ।

डूबते हुए को किनारा जैसी ममतामयी सहारा जैसी,
हृदय में उठती उमंग जैसी मर्मस्पर्शी तरंग जैसी,
तुम ऐसी ही रहना माँ।

निगम गीत-गुणगान जैसी देवी की पहचान जैसी,
मुझमें बसी तेरी काया जैसी मुझसे उद्धरित हमसाया जैसी,
तुम ऐसी ही रहना माँ।

मणीशंकर दिवाकर

मणीशंकर दिवाकर (अधिवक्ता/गदगद) हास्य कवि

पता- ग्राम-पोस्ट व थाना - चंदनू तह. व जिला-बेमेतरा (छ. ग.),

पिता- श्री प्रभुराम दिवाकर

माता-श्रीमति फुलमनी दिवाकर

जन्मतिथि-25/09/1981

शिक्षा-एम.ए.(हिन्दी सा.व रा. वि.),एल.एल.बी.कोपा आई. टी.आई,

पी.जी.डी.सी.ए.

पेशा-वकालत जिला एवं न्यायालय बेमेतरा (छ.ग.)

माँ की ममता का अनुपम का प्यार चाहिए

माँ की ममता जैसा ममत्व प्रेम जमानें में नहीं मिलेगा,
अद्‌वितीय है माँ की ममता इनका आशिष ना मिले तो चेहरे में मुस्कान ना खिलेगा,

माँ की ममता का स्वरूप,गुरू जैसा अनुपम आशिष अनमोल है,
सारा संसार फ़िका सा लगता है जब माँ का ना अहम रोल है,

माँ ही सद्‌गुण आचरण विचार जीवन शैली मे परिवर्तन लाती है
माँ ही देश राज्य समाज में शिक्षा दीक्षा में हमें बहूमुल्य योगदान पाठ का ज्ञान सिखाती है,

माँ की ममता अथाह है,
ना जाने अपने औलादों के लिये कितनी तन्मयता से चाह है,

माँ ही हमें अच्छें बुरे चीजों का विशेष ज्ञान बचपन से ही रोकटोक कर सिखाती है,
माँ ना जाने अपने औलादों को पालन पोषण खुश रखने में कितना दु:ख सह जाती है,

माँ हमको कभी कविता, कभी कहानी या तो गाकर सुलाती है,

आपको हमकों भी पता नहीं ना जाने बचपन में कितनों बार गोद आंचल सीने से लगाती है,

माँ की यादें हमेशा स्मृति में रहती है जो आपको हमें उनके यादें सताती है,

माँ ही हमें जन्म से अब तक
डाट फटकार कर हर एक ज्ञान की सिखाती !!

तेजश्री ढोमणे

नाम: तेजश्री ढोमणे

मै नागपूर (महाराष्ट्र) से हु |

मै कक्षा १२वी की छात्रा हु और मुझे लिखना पसंद है|मैने लिखी हुई एक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है |मै अपने लेखन के माध्यम से अपने विचार दुसरो तक पहुचाना चाहती हु |

माँ

एक अनाथ बच्चे ने एक शख्स से पूछा कि माँ क्या होती है ?
उस शख्स ने बड़े खुबसुरत जवाब दिया----

की माँ वो होती है जो
बच्चो को रोते देख खुद भावूक होती है
और खुद को सक सम्भालकर
फिर बच्चो को हिंमत देती है।

माँ वो होती है जो खुद दुःख मे होते हुए भी बच्चो को सुख देती है
माँ वो होती है जो खुद एक निवाला कम खाकर बच्चो के पेट भरती है|

माँ वो होती है जो दिन-रात मेहनत करकर अपने बच्चो के सपने पुरे करती है
और अपना सारा जीवन बच्चो को
खुश रखने में बिता देती है|

माँ वो होती है
जो अपने परिवार को जोडकर
उन्हें खुश रखने की कोशिश करती रहती है|

माँ वो ममता की मुरत होती है जो जिससे हमेशा प्रेम, ममता, दया, करुणा और बहोत कुछ झलकता रहता है |

जो मुझे न मिल को मिले सका वो मेरे बच्चो को मिले यह सोचने वाली माँ होती है |

समीउल्लाह खान

रचनाकार का नाम: समीउल्लाह खान

जन्मतिथि:५ -५-१९६६

जन्म स्थान: कल्लूर

पिता: बहार अली खान

माता: सकीना बी

पति/पत्नी: हफीजा

शिक्षा: एम.ए(हिंदी),एम.ए(इंग्लिश) बी.एड

संप्रति/कार्य: पी.जी.टी (हिंदी)

लेखन विधाएं: कविता/लेख/कहानी/बाल चौ पाई

पता:मकान नं ८-४-३३८ ,निजामपेट, खम्मं। खम्मं जिला, तेलंगाना।

1.जब तुम पैदा होते ही डाक्टर के नोचने या थप्पड से रो पड़े
तब आपकी मां के खुशी के आंसू
ओस के बूंदों सा झरने लगे।
फिर कभी तेरी मां ऐसा खुश न होगी आजीवन तेरे रोने पर।

2.मगर आज तू पत्नी के कानाफूसी से मां को बे घर किया।
तेरी तंदुरुस्ती के लिए नींद हराम कर लिया मां ने, मगर आज तू ने
मां को बरामदे में गीले बिस्तर पर लिटा दिया।

3. माता पिता की कैफियत जरा पूछा करो,क्या हाल है उनकी तबीयत की।
सदा माता पिता की सेवा सुश्रुषा किया करो, जिंदगी के अनुपम
वरदानों को भूला मत करो।

4.मां के पैरों तले जन्नत है, माता पिता की सेवा भूल कर अपने
पारलौकिक जीवन को नरक मत बनाओ, लोगों को वृद्धाश्रमों की स्थापना
का मौका दिया न करो।

श्रीमति ज्योति रानी(राज)

नाम-श्रीमति ज्योति रानी(राज)

जन्म तिथि-10.08.1981

शिक्षा-एम0ए0 हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बी0एड0

कार्य एवं रूचि-टी0जी0टी0 शिक्षिका(लेखन, गायन एवं शिक्षण कार्य)

जीवन सहचर-श्री राजेश कुमार

कार्यस्थल-श्री गुरू राम राय सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल, सहुहागपुर, धामपुर(बिजनौर)

पता-निकट रामगंगा कालोनी धामपुर उत्तर प्रदेश पिन-246761

माँ का आँचल

कितना प्यारा माँ का आँचल
गंगा सी धारा माँ का आंॅचल
जीवन का अंकुरण माँ का आँचल
वीरों का सृजनहारा माँ का आँचल
जब छाये घटा दुख की बदली
तो छाता बन जाता है माँ का आँचल
नेह का बंधन माँ का आँचल
ममता की धारा माँ का आँचल
जीवन पाठ सिखाता माँ का आँचल
हर लक्ष्य दिखाता माँ का आँचल
देवो का प्रसाद है माँ का आँचल
हर बच्चे की फरियाद माँ का आँचल
मन करता है माँ से स्वर्ग में मिल आऊं
परियों जैसी बैठी होगी मैं माँ से मिल आऊं
मैं फिर से बच्ची बनकर सो जाऊं
मेरे सिर पर लहराये माँ का आँचल

प्रज्ञा महेंद्र शर्मा

प्रज्ञा महेंद्र शर्मा

माता-श्रीमती पार्वती शर्मा

पिता- श्री चंद्रिका प्रसाद शर्मा

शिक्षा- एम. ए हिदी

व्यवसाय- अध्यापिका इंटर कॉलेज, कौशाम्बी

2017 में बिंदकी, फतेहपुर से पहली महिला लेखिका का सम्मान

साहित्य संगम संस्थान से कई सम्मान प्राप्त

2002 में केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रगतिशील चेतना एक आलोचनात्मक अध्धयन

माँ समान दूजा नही

त्याग समर्पण का प्रतिरूप है माँ।
मेरी आस और विश्वास है माँ,
गगन भी और धरा भी है माँ,
आशीष और प्रेम का सागर है माँ,
मेरे जीवन का प्रथम शब्द है माँ,
कैसे गुण गान तेरा गाउँ निःशब्द हूँ माँ
वह मेरी भगवान और मैं पुजारन हूँ,
वह दाता और मैं भिखारन हूँ,
माँ से ही मेरी असली पहचान,
माँ से ही मिला मुझे जीवनदान,
माँ राह के काँटो को फूल बनाए,
माँ कठिन राहों को आसान बनाए,
सुख-दुख में माँ सदा साथ निभाए,
बिन बोले ही माँ मेरे गम जान जाए,
मेरी आदर्श मेरी जान है माँ
ईश्वर का दूजा रूप है माँ,
माँ को शत शत नमन

दिवाकर पाण्डेय

नाम-दिवाकर पाण्डेय

पिता-ओमनारायण पाण्डेय

माता-मुन्नी देवी

जन्म-10-8-1994

जन्म स्थान-बिहार

शिक्षा-बी.ए(हिन्दी)-दिल्ली विश्विद्यालय ,एम.ए(हिन्दी), इन्द्रगाँधी विश्विद्यालय(दिल्ली) एवँ बी.एड(हिन्दी)विवेकानन्द विश्विद्यालय(हरियाणा)।

कार्य-प्राइवेट संस्थान में शिक्षक

खोईछा

जब भी ससुराल से
मायका आओ तब
वापस लौटते समय
माँ आँचल में कुछ ना
कुछ डाल ही देती है।

वह अपने से दौड़कर
तोड़ लाती है दुभ व
साबूत हल्दी और दौड़ी
में अरवा चावल लेकर
खोईछा उड़ेल ही देती है।

कभी पोता का मुण्डन
हुआ तब कभी किसी का
विवाह हुआ तब पूरा बैग
साड़ी,चूड़ी ,लहठी बिंदिया
सिन्दूर, से भर ही देती है।

माँ अपना मातृत्व प्रेम
इसी रूप में दिखती हैं और

हमारे सभी सुख दुःख को
वह आसानी से बिना कुछ
कहे समझ ही लेती है।

वह कभी कुछ नहीं माँगती
पर हमारे स्वभिमान को ठेस
पहुँचाये बिना यह मुझे तुझे
देने का मन था वह एक बड़े
सलीके से कह ही देती है।

रास्ते के लिए अपने हाथों
से पुआ पकवान बनाकर
मिठाई ख़रीदकर रास्ते में
भूख लगे तो खा लेना कह
एक मोटरी बांध ही देती है।

बिदाई करते समय हमारे
गले लग हमारे कन्धों को
आंसुओ से भिगोकर फिर
कब आओगी कह अपना
वात्सल्य प्रेम लुटा ही देती है।

ममता राजपूत ',हीर'

नाम - ममता राजपूत ',हीर'

जन्मतिथि - 31/07/1984

शिक्षा - एम.ए.(अर्थशास्त्र), डी. एड

व्यवसाय-शिक्षिका

उपलब्धि - विभिन्न राज्यों से सम्मान पत्र प्रतीक चिन्ह प्राप्त साझा संकलन, समाचार पत्र पत्रिकाओं में रचना प्रकाशित ।

लेखन विधा-ग़ज़ल ,छंद, स्वतंत्र कविताएं।

माँ

माँ का रूप तो प्यारा।। दर्पण। होता है,
माँ का जीवन बच्चों पर। अर्पण होता हैं।

सब रूपों में माँ एक अनोखी। होती। है ।
सच में माँ मन मंदिर की देवी होती है।।

त्याग और बलिदान है माँ का जीवन।
माँ बिन तो सूना है धरती का आंगन।।

माँ का। रुप सदा उस तरुवर जैसी है।
माँ जन्म दायिनी। तो हाँ ईश्वर जैसी। है।।

माँ का डांट व। गुस्सा न्यारा लगता। है।
माँ का राग। दुलार भी प्यारा लगता है।।

माँ सरिता। सी। पावन। हम पर प्यार लुटाती।
माँ। चंदन सा। है जीवन बगिया महकाती।।

बचपन और लडकपन हर पल देखा। हमनें
छाया बन आकाश के जैसा आँचल चल देखा हमनें।।

जब भी गिरते तो माँ ने संभाला हमको।

मुँह का निवाला। देकर। ही। माँ ने पाला हमको।।
कोई। बला न छूऐ सच में देती दुआएं हमको।

साथ हमारे। मां। है फिर क्या डर। है
हमको।।
इससे पहले हम संभालते उसे हमे संभाला है उसने।
भरकर अपनी दोनो बाहों में हमसे कहा है उसने।।

क्यों रोते हो मेरे बच्चों मैं जो हूँ पास तुम्हारे अब भी।
और जो माँ धरती थी वो बन गई अब आकाश भी।।

प्रतिभा त्रिपाठी

नाम- प्रतिभा त्रिपाठी

पति- श्री सुधीर कुमार त्रिपाठी

व्यवसाय- शिक्षक

शा. पूर्व मा शाला गोडेला गुन्डरदेही जिला-बालोद छत्तीसगढ़

शिक्षा- बी.एस . सी (बायो), एम. ए. (हिन्दी& संस्कृत), बी.एड. , डी. सी.ए.

प्रकाशन- साझा संकलन काव्य * कोरोना काल और शिक्षा, काव्यनगरी 2, molten gold book, Feeling book, बेटी, जय गणेश देवा, हिन्दी(विजय कुमार शर्मा संकलन , स्वदेश संस्थान में प्रकाशित मेरी रचना, पत्र पत्रिकाओं व शासकीय किताबों में रचनाएँ प्रकाशित

मॉ की ममता

मॉ के ऑचल में छिपा
मेरा सारा संसार,
मॉ की ममता में हैं,छिपा
मेरी खुशियां अपार॥

मॉ के चरणों की धूल
दूर करें जीवन का शूल,
तुम मेरे जीवन का फूल
बनके रहना हमेशा कूल ॥

मॉ की ममता बड़ी न्यारी
मेरी मॉ दुनिया से प्यारी,
मॉ दया की सागर है
मॉ का जीवन एक गागर हैं

मॉ के ममता की छांव में
जाने कब बड़ी हो गई,
आज भी लगता हैं,मन में
मैं फिर बच्ची बन जाऊं

मॉ के चरणों से
बड़ा नहीं कोई धाम,
कर लो मॉ की सेवा
इससे बड़ा नहीं कोई काम

अजय वर्मा 'अजेय'

अजय वर्मा 'अजेय'

प्रवक्ता - सरदार पटेल स्मारक इंटर कॉलेज लारपुर, अंबेडकर नगर, (उत्तर प्रदेश)

साहित्य जगत की उपलब्धियां- काव्य पाठ एवं मंच संचालन, 11 साझा काव्य संग्रह में रचनाएं प्रकाशित और कुछ अन्य साझा काव्य संग्रह में प्रकाशित होनी हैं।

कलम अनुरागी, साहित्य प्रेमी ,कलम के सिपाही, आदि विविध साहित्यिक सम्मान से सम्मानित

माँ

माँ अनुपम है,अनंत है,अमूल्य है तेरा प्यार,
अनगिनत उपकारों से जीवन दिया संवार।
कष्टों में भी रहकर माँ करती सुख का संचार।
न देखा माँ तेरे जैसा पालनहार।
चोखा है,अनोखा है,न्यारा है माँ तेरा दुलार।
माँ रहनुमा है,दोस्त है और है तारणहार।
चोट लगने पर हर कोई करता माँ की पुकार।
माँ हमेशा करती आशीषों की बौछार।
सर्दी-वर्षा या हो गरम बयार,
कम नहीं होता माँ का प्यार।
माँ की ममता से उपकृत्य है सारा संसार।
यश-प्रसिद्धि से मिलती है ऊंचाई अपार,
पर माँ की ऊंचाई कोई नहीं कर सकता पार।
हर झंझावतों की माँ है मोचनहार।
हरदम कायम रहे माँ का प्यार,
झन-झन बोले दिल का तार।
माँ की ममता को नमन बारम्बारा।
'अजय' लगाए पुकार,
स्तुति करो स्वीकार।

हर जनम मिले माँ तेरा प्यार।

बिन माँ के सूना है संसार।

माँ अनुपम है,अनंत है,अमूल्य है तेरा प्यार,

माँ अनुपम है,अनंत है,अमूल्य है तेरा प्यार।।

विनय बंसल

इनका नाम विनय बंसल है। ये आगरा के निवासी हैं। इनके 3 एकल काव्य संग्रह, 22 साझा काव्य संग्रह, 12 साझा लेख संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 30 पत्रिकाओ में इनकी अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्हें 200 से अधिक सम्मान पत्र प्राप्त हो चुके हैं।

माँ

अपनी धड़कन के झूले पर, जिसने हमें झुलाया।
जिसने अपनी पीड़ाओ को झेला और भुलाया।
खुद गीले में सो कर जिसने, सूखी सेज सुलाया।
जाग जाग कर रात रात भर, अपनी गोद सुलाया।

पाला पोषा जिसने हमको, अपना दूध पिलाया।
स्वयं भले भूखी रह जाती, हमको मगर खिलाया।
संस्कार दीन्हे अच्छे अरु अच्छा पाठ पढ़ाया।
आन पड़ी हो कोई विपदा, उनसे हमें बचाया।

कभी नहीं पड़ने दी हम पर, दुःख की काली छाया।
दुःख की घड़ी में खुद रो ली पर, हमको नहीं रुलाया।
माँ की ममता आज तलक भी, समझ न कोई पाया।
नमन करूँ उस प्यारी माँ को, जिसने मुझको जाया।

स्वराक्षी स्वरा

स्वराक्षी स्वरा ,खगड़िया बिहार (852161)

योग्यता,,,स्नातकोत्तर

विधा,,,गीत,ग़ज़ल, दोहे,मुक्तक, नज्म,कहानी,संस्मरण आदि।

संस्था-- स्वरांजलि साहित्य सेवा समिति खगड़िया, बिहार (संस्थापिका)

हिंदी भाषा परिषद खगड़िया(सँयुक्त सचिव)

पत्राचार का पता---- Swarakshi Swara

C/0..shri windeshweri sah
(Sarpanch)At..Hanuman nagar,ward n=4 , PO+PS=beldaur
Dis=khagaria (852161)

जिनके पुण्य प्रताप से हमको
है मानव का रूप मिला
खो ही जाती अंधकार में
मात - पिता का धूप मिला ।।
हमको मिली है कंचन काया
और बहुत सम्मान मिला
ऋण तेरा मैं कैसे चुकाऊं
तुमसे ही है नाम मिला
जब भी चाहा,जो भी चाहा,
सब तेरे अनुरूप मिला
मेरी हर गलती को मैया
ह्रदय बीच बसाना न
जब चली जाऊं डोली चढ़ कर
पापा मुझको भुलाना न ।।
स्वरा करे क्यों देव् की पूजा,
है तुझमें प्रतिरूप मिला

रचना उनियाल

रचना उनियाल

पिता- स्वर्गीय कवि भगीरथ

माता-श्रीमती मंजू काले

पति -कर्नल अरविंद मोहन उनियाल (सेवानिवृत्त

शिक्षा-रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर, व बी.एड.

(भूतपूर्व अध्यापिका)

शैक्षिक योग्यता- भूतपूर्व अध्यापिका

स्नातकोत्तर रसायन विज्ञान,बी.एड.

मनपसंद लेखन विधा- गीत, घनाक्षरी,

सम्मान-विभिन्न मंचों द्वारा काव्य लेखन के लिए पुरस्कृत

पता-फ़्लैट नम्बर-४१० ,साई चरिता ग्रीन ओक्स अपार्टमेंट, होरामवु मेन रोड ,होरामवु,बेंगलुरु (कर्नाटका)

माँ की ममता

सानी ममता का कहाँ,ममता नेह अमोल।
तोल इसे सकते नहीं, कभी तराजू तोल।।
कभी तराजू तोल,बिना माँगे यह मिलता।
बढ़ती बालक आयु,प्रसू खुशियों में खिलता।।
रचना रचती आज,बंध पावन कल्यानी।
भाव त्याग का मान,कहाँ ममता का सानी।।

माता का आँचल पकड़,आँखें लेता मींद।
जैसे उठती मात है, बालक त्यागे नींद।।
बालक त्यागे नींद, नैन पूरे खुल जाते।
टुकर-टुकर कर देख,अंक माता का पाते।।
रचना रचती आज,कभी जब शिशु सो जाता।
लूँ थोड़ा आराम, यही कहती है माता।।

रातों को है जागती, लेकर शिशु को अंक।
नींद भरीं अँखियाँ रहें,क्षुधा बनी है रंक।।
क्षुधा बनी है रंक,नवजात पय को पीता।
चंद्र किरण के संग,समय भी जाये बीता।।
रचना रचती आज,एकांत करता बातों।
माता नेहिल भाव,धरे वह जागे रातों।

ललन प्र सिंह

ललन प्र सिंह

-1958 में पटना में जन्म

-केंद्रीय विद्यालय से सेवानिवृत्त

-दो दर्जन से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में सौ से ज्यादा कहानी, लघुकथा, कविता एवं आलेख प्रकाशित एवं पटना रेडियो-दुरदर्शन से भी प्रसारित।

माँ की ममता

माँ की आँचल में
सबसे पवित्र और
ताकतवर भाव
है अमोघ ममता.

पुत कपुत से परे
माँ को माँ बनाती
करुणामयी माँ की
निश्छल ममता.

माँ की अनुपस्थिति
ही यहसास कराता
माँ को माँ होने की
अहमियत समझाता.

माँ की भूमिका
अपना या पराया पुत
माँ का भाव दिखे
अनूठी सदैव समता.

मनुष्य अवतरण का
माँ ही है मूल उद्‌गम
स्थूल काय में भाव
डाले नामे जड़ता.

दुष्कर काल में
शक्ति प्रदायी
माँ मंत्र का स्मरण
ही देती सफलता.

उनकी आँचल
उनकी ममता
रौद्र रूप धर
देती सबलता

डॉ० मीनी झा 'साक्षी'

रचनाकार का नाम : डॉ० मीनी झा 'साक्षी'

जन्म तिथि : २२/४/१९७८

जन्म स्थान : भट्टपुरा

पिता : श्री नेत्र नाथ मिश्र

माता : श्रीमती भारती मिश्रा

पति/पत्नी : श्री सुरेन्द्र नाथ झा

शिक्षा : D.L.Ed, BLIS, P.G ,Ph.D

सम्प्रति / कार्य : शिक्षिका (दिल्ली पब्लिक स्कूल कादिराबाद ,दरभंगा)

लेखन विधाएँ : मैथिली और हिंदी कविताएं एवं लेख

मॉ की ममता

मॉ की ममता समझ न पाऊं
मॉ से ही जग की पूरी सृष्टि है
मॉ से ऊपर नहीं कोई शक्ति है
मातृभक्ति से नहिं कोई भक्ति है।
मॉ ही ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है ,
मॉ ही ईश्वर के समतुल्य है,
मॉ निस्वार्थ भावना से परिपूर्ण है
मॉ क्षमा, दया, करूणा से पूर्ण है।
प्राणीमात्र ही मॉ से ही निर्मित है
मॉ में समाहित संपूर्ण संसार है
मॉ की ममता से ही जीवन पूरी है
मॉ के बिना जिंदगी ही अधूरी है
मॉ का प्यार ही बच्चों की कवच है
मॉ ही जीवन की सबसे बड़ी सच है
मॉ की ममता बया नहीं की जा सकती
मॉ का एहसास कोई मिटा नहीं सकता।
मॉ का प्यार कभी मर नहीं सकता
मॉ के बिना कोई सृष्टि रच नहीं सकता
मॉ का एहसास मन का विश्वास है
मॉ शब्द का नहीं कोई उपहास है
मॉ ईश्वर का दिया अमूल्य उपहार है
मॉ के बिना सारा जीवन ही बेकार है

मॉ की ममता जीवन में अनमोल है
मॉ के बिना जीवन का नहीं कोई मोल है
मॉ साहस और त्याग की देवी है
मॉ सफलता की हर कुंजी है
मॉ दुखों में बच्चों के साथ रहती है
मॉ बच्चों को अपने से ऊपर रखती है
मॉं सहनशीलता ,त्याग की देवी हैं
मॉ कष्टहारिणी और सुखदायी हैं
मॉ से ही सारी पृथ्वी सजती है
मॉ क्षमा,धैर्य ,दया की मूरती है
मॉ की ममता सागर से भी गहरा है
मॉ का आशीर्वाद सिर पर सेहरा है
मॉ ही प्रथम गुरु बनकर हमें
सच और नैतिकता की राह दिखाती हैं
खुद मॉ कांटों की पथ को चुनकर
बच्चों को फूलों से राह सजाती हैं।
ममता की मूरती है सब मॉ
जीवन जीने की राह दिखाती है
भला -बुरा सब समझाकर मॉ
आदर्शवादी हमें बनाती हैं।
मॉ का ह्रदय कभी नहीं कठोर है
मॉ का आशीर्वाद जीवन की डोर है
'मॉ का आंचल' ही छत्रछाया है
'मॉ की ममता' में जीव समाया है।

अनिल राही

अनिल राही

कवि,लेखक,साहित्यकार

शैक्षणिक योग्यता --विज्ञान स्नातकोत्तर

व्यवसाय--सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर

पता--"शिवालय"93

मनोहर एनक्लेव

सिटी सेंटर ग्वालियर

मध्यप्रदेश 474002

माँ की ममता

माँ तुझसे प्यार बहुत पाया
दुनियाँ की सारी बाधाएं
चलती विपरीत हबायें
सहन कर तेरे आँचल में समाया

माँ तू बड़ी करुणामयी हमदर्द का साया
तेरी ही ममता की छावं में
तेरे प्यारे से दुलारे से हांथों में
झुलसती राहों में तेरे आँचल की छाया

माँ ये जमाना बड़ा बेदर्द बहुत रुलाया
कांटों से बिछा हुआ है रास्ता
पग पग पर शूलों से है बास्ता
माँ तेरे आँचल की आड़ ने हमें बचाया

हम तो अन्जान थे माँ तूने हमे बताया
तूने ही जगत से पहचान कराई
तूने ही इस जमाने की रीति सिखाई
तूँ ही हम सफर बन तूने ही पाठ पढ़ाया

डॉ माधुरी त्रिपाठी

नाम डॉ माधुरी त्रिपाठी

पिता का नाम स्व. शुभचिंतक त्रिपाठी

शिक्षा एम,ए, हिंदी , अंग्रेजी,समाजशास्त्र पीएचडी एम,बी,ए, मानव संसाधन सूचना प्रौद्योगिकी

एमएसडब्ल्यू , ओडिसी डांस में विशारद, बीहू में गोल्ड मेडलिस्ट

जन्मतिथि २३/३/१९७७

कार्य का प्रकार = शासकीय सेवक उप , संचालक कृषि रायगढ़ में , पदस्थ सहायक ग्रेड दो

माँ की ममता

सहनशीलता में धरती है,मन विस्तृत आकाश है
मां है मेरी ममता की मूरत, जिस पर मुझे अभिमान है
मेरी मां सारे जग मे महान है
मां से अधिक न प्रेरक होते नये -नये प्रतिमान भी
मूल्य हीन है उसके सम्मुख बड़े -बडे अनुदान भी
मां के निकट पहुंच कर देखो ,जब भी मन असहाय हो
उस आंचल में थम जाएंगे,भीषणतम तूफ़ान भी
उसके आशीषो में होता, ईश्वर का आभास है
अपना सब -कुछ उसे त्यागने देने में उल्लास है
स्नेह उसी ने भरा दीप में, फिर जलने की सीख दी
हर विपरीत हवा में निर्भय हो चलने की सीख दी
ऐसा है माहौल कि घर भी लगता अब बाजार है
कीमत से आंका जाता अब हर नाता ,हर प्यार है
मां का मन ना दुखाना जाने या अनजाने में
उसका कदर करना ना भूलो धन ,पद, शिक्षा के अभिमान में
मां के मन का एक-एक शब्द भी सरल -सहज आशीष का
स्वयं परावर्तित हो जाता है दैवी वरदान में
मेरी मां की मूरत लगती मुझे देवी की सूरत
मां की ममता के लिए मेरा बारम्बार प्रणाम है

भावना भूषण

जैव: सह-लेखक बिहार के मुजफ्फरपुर के रहने वाले लेखिका हैं, लेकिन वर्तमान में केपटाउन, दक्षिण अफ्रीका में बसी हैं। वह घर में रहती है और अपने परिवार की देखभाल करती है।

जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझकर, प्रेरित होकर लिखती है, उन्हें अपने लेखन कौशल का ज्ञान नहीं था, रसोई में काम करते समय उनके विचारों ने शब्दों का रूप ले लिया। और जब भी कुछ सोचती है तो वह लिखना शुरू कर देती है।

माँ का प्रेम
माँ की चिंता
माँ की अजीब सी रूप रेखा,

कभी अपने बच्चे से
खूब लाड़ लगाती वो।
कभी अपने ही बच्चों पर,
भड़क सी जाती वो।

वो क्षण भर के आक्रोश को,
सह ख़ुद भी नही पाती।
सो जाने पर अपने बच्चे के,
उनसे माफ़ी माँगती जाती।

माँ का प्रेम...

अपने हाथों की तरहति पर,
कभी फुकती गरम खाने को।
भूके बच्चे की पेट भरने को ,
वो भूल जाती उस भाप को।

प्रेम में ऐसी वो वसी भूत,
सूझता भी नही अपना स्वरूप।

फ़िर भी ऐसी विडंबना है।
बच्चों में आई कोई कमी,
तो उसके पीछे कारण...
उसकी ही माँ है।

माँ का प्रेम
माँ की चिंता
माँ की अजीब सी रूप-रेखा।

शिवानी श्रीवास्तव

शिवानी श्रीवास्तव

छात्र एवम कवित्री

जनपद - फैज़ाबाद (अयोध्या) उत्तर प्रदेश

शैक्षिक योग्यता- MSW(Master of social work)

जन्म - 05/04/1999

पिता- सुरेश कुमार श्रीवास्तव

माता- शिवकुमारी श्रीवास्तव

पता - नियांवा, नया पुरवा ऊंचवा फैज़ाबाद, अयोध्या।

माँ

धूप में भी सुकून मिल जाता है,
जब मां का आंचल सर पर होता है।
लड़खड़ाते कदम संभल जाते हैं,
साथ मां का जब होता है,
एक ही रोटी में मिट हमारी भूख जाती है,
जब मां के हाथों की रोटी मिल जाती है।
हर असंभव कार्य संभव हो जाता है,
धीरज धरो सब हो जायेगा,
मां के मुख से सुनने को जब ये मिलता है।
ठंडक दिल को मिल जाता है,
जब पास मां मेरी होती है।
मां पर अक्सर हम चिल्लाते हैं,
मां से दूर होने पर ही कीमत उनकी समझ पाते हैं,
जरा सी चोट और भूख लगने पर ,
कंठ से मां स्वर ही निकलता है, नयनों में आसूं लिए, मां की याद ये दिलाता है,
मां के आंचल से ज्यादा सुकून कहीं और नहीं मिलता है,
कहीं और नहीं मिलता है।।